संसद भवन परिसर के बालयोगी सभागार में 12 अगस्त, 2014 को आयोजित उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार (वर्ष 2010, 2011 और 2012) समारोह में माननीया लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन का स्वागत भाषण

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार प्रदान करने के इस समारोह में आपका स्वागत कर रही हूं। माननीय राष्ट्रपति जी की विशिष्ट उपस्थिति व इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों को प्रदान करने हेतु उनकी सहमति के लिए हम उनके आभारी हैं। मैं, माननीय उपराष्ट्रपति जी और माननीय प्रधानमंत्री जी का भी इस समारोह में उपस्थित होने के लिए आभार व्यक्त करती हूं।

भारतीय संसदीय ग्रुप द्वारा स्थापित यह उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार उन सांसदों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने अपने संसदीय कर्त्तव्य का निवर्हन बहुमूल्य योगदान देते हुए निभाया, अनुकरणीय दृष्टांत प्रस्तुत किए और उच्च मानक स्थापित किए हैं। इतिहास हमेशा से साक्षी है कि हमारी संसद में अनेक प्रखर, कर्मठ और अनुभवी सांसद रहे हैं जिन्होंने इस पवित्र संस्था की कार्यवाही में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज, सम्मानित होने वाली उस सूची में और नाम लिखे जा रहे हैं। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित होने वाले सांसद - श्री अरूण जेटली, डॉक्टर कर्ण सिंह और श्री शरद यादव को अपनी एवं सभी सांसदों की ओर से हार्दिक बधाई देती हूं।

वर्ष 2010 के लिए उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार, अनुभवी सांसद, नागरिक अधिकारों तथा स्वतंत्रता के पुरजोर समर्थक और सम्मानित वकील, श्री अरूण जेटली को प्रदान किया जा रहा है। कम उम्र में ही सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वाले श्री जेटली कुशल कार्यशैली के धनी हैं, विधि व वित्तीय मामलों में उनकी समझ बहुत उत्कृष्ट है। वे देश की जनता की नब्ज़ जानते हैं और उनकी आवश्यकताओं को समझते हैं। वे कई वर्षों से सांसद के रूप में देश को अपनी सेवाएं दे रहे हैं और सदन की कार्यवाही में इनके विचारों की उपस्थिति हमेशा प्रभावपूर्ण रही है। वर्तमान में केंद्रीय मंत्रिमंडल में वित्त, कार्पोरेट कार्य और रक्षा मंत्री का अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्व संभाल रहे जेटली जी राज्य सभा में नेता प्रतिपक्ष भी रह चुके हैं। सत्ता पक्ष के साथ ही प्रतिपक्ष के सदस्य भी उनकी प्रतिभा के कायल हैं। इनके बारे में मैं कहना चाहूंगी-

शतेष जायते शूरः सहस्रेषु च पंडितः।
वक्ता दशसहस्रेतु दाता भवति वा न बा।।

वर्ष 2011 का उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार डॉ. कर्ण सिंह को प्रदान किया जा रहा है, जो अनुभवी सांसद होने के साथ ही सुप्रसिद्ध लेखक, दार्शनिक, विचारक, शिक्षाविद्, पर्यावरणविद् और देश के सांस्कृतिक राजदूत भी हैं। डॉ. सिंह आठ बार संसद के लिए निर्वाचित हुए, जिसमें से दोनों सदनों के लिए वे चार-चार बार चुने गए। अपने चार दशकों के अपने लम्बे संसदीय करियर में उन्होंने केन्द्रीय मंत्री के रूप में कुशलता से कार्य किया, वहीं अन्य महत्वपूर्ण पदों को भी सुशोभित किया। उनके बारे में इतना जरूर कहना चाहूंगी कि जितना इनका अध्ययन है, उससे कहीं ज्यादा इनका चिंतन है और श्रेष्ठ चिंतन ही मनुष्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचाता है। राष्ट्रसेवा को प्राथमिकता देने वाले डॉ. कर्ण सिंह जी की शख्सियत के बारे में मैं यह श्लोक कहना चाहूंगी-

वदनं प्रसादसदनं सदयं सुधामुचौ वाच:।

करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्या।।

इसी प्रकार, वर्ष 2012 के उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से श्री शरद यादव जी को सम्मानित किया जा रहा है। श्री यादव बहुमुखी प्रतिभा वाले राजनीतिज्ञ हैं जिनका व्यक्तित्व बहुत ही सादा और सर्वजनप्रिय है। वे देश की गरीब, शोषित, पीड़ित जनता की समस्याओं को अत्यंत सहजता और सरलता से समझते हैं एवं उनसे संबंधित मसलों को बहुत ही मजबूती के साथ संसद और हर मंच पर उठाते हैं। जे.पी. आंदोलन से निकले शरद जी के भाषणों में कटाक्ष के साथ व्यंग्य भी छिपा होता है। उन्होंने चार दशकों से भी ज्यादा लंबा सार्वजनिक जीवन बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ जीया है। वे सात बार लोक सभा के और तीन बार राज्य सभा के लिए चुने जा चुके हैं और इस दौरान केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कई महत्वपूर्ण दायित्व उन्होंने बखूबी निभाए हैं। यादव जी अपनी बेबाक टिप्पणी के लिए भी जाने जाते हैं। लेकिन वे सहज, सरल और मिलनसार हैं। उनके बारे में मैं यह कहना चाहूंगी-

उदये सविता रक्तो रक्त: श्चास्तमये तथा।

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

वर्तमान लोक सभा में पहली बार चुने गए सांसदों की संख्या बहुत अधिक है। मैं चाहती हूं कि हमारे युवा सांसद, आज इन सम्मानित सांसदों और वरिष्ठजनों से बहुत-कुछ सीखें, प्रेरणा लें। इसी तारतम्य में, हम बी.पी.एस.टी. के माध्यम से भी नए सांसदों को संसदीय परंपराओं की सतत् जानकारी दे रहे हैं, ताकि वे भी हर दृष्टि से अच्छे - सजग सांसद बनकर आगे इसी तरह पुरस्कार पाएं। आज सम्मानित होने वाले तीनों सांसदों को मैं पुन: बधाई और शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद।